International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.9 No.5 May – June 2022

पिछले दस वर्षों में किये गये हिन्दी बाल साहित्य के अभ्यासों का मूल्यांकन

पंचाल अमिता
पीएच.डी. विद्यार्थिनी, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटी, सूरत
***Corresponding Author*- पंचाल अमिता**
Email- amitarampanchal3553@gmail.com

सारांश
प्रस्तुत अभ्यास में देखने की कोशिश की गई है कि पिछले दस सालों में हिन्दी बाल साहित्य के विषय में शोधगंगा वेबसाईट पर जितने भी अभ्यास ग्रंथ अपलोड किये गयें है उनमें से ज़्यादातर कौनसे विषय या स्वरूप में अभ्यास देखने को मिलतें हैं एवम् एक ही युनिवर्सिटी से जो अभ्यास करायें गयें हैं उनमें विषय वैविध्य देखने को मिलता भी हैं की नहीं? यदि हाँ, तो कौनसी समानताए देखने को मिलती है? आंतर विद्याकीय शाखा की ओर भी कोई अभ्यासी अभ्यास हेतु गया है?

औचित्य
किसी भी भाषा में बाल साहित्य एक ऐसा स्वरूप है जिसमें सृजन और अभ्यास बाकी स्वरूपों की मात्रा में कम दिखाई पडता है या कम किया देखा जाता है। साल भर में जितना साहित्य सृजन होता है उसमें से बाल साहित्य के सृजन की मात्रा बहुत कम होती है। ऐसी परिस्थिति में यदि अभ्यास ग्रंथों की बात करें तो जहाँ सृजन अल्प मात्रा में हो वहाँ अभ्यास विपुल मात्रा में कैसे मिल सकता है? फिर भी हिन्दी साहित्य में स्वतंत्रता के पश्चात अच्छी मात्रा में बाल साहित्य सृजन मिलता है। बाल साहित्य की रचना का उद्देश्य बाल मनोविकास, गुण संवर्धन, शौर्य-संस्कार का सिंचन आदि होतें हैं। अत: मनोविज्ञान की शाखा को यह विषय अधिक स्पर्शक्षम होता है। बालक का व्यवहार, बढ़ती उमर के साथ बदलती सोच, सामाजिक व पारिवारिक परिवेश, आनुवांशिकता आदि की वजह से बदलती सोच व बर्ताव वगैरह मनोवैज्ञानिक शोध के विषय होतें हैं। इस दृष्टि से बाल साहित्यिक अभ्यास में आंतर विद्याकीय अभ्यास को भी अवकाश मिलता है।
प्रस्तुत पत्र में सम्मिलित अभ्यास ग्रंथो का इसी दृष्टि से मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया गया है।

उद्देश्य
प्रस्तुत अभ्यास पत्र का उद्देश्य यही है कि हम जान पायें की पिछले दस वर्षों में हिन्दी बाल साहित्य के क्षेत्र में अधिकतर किस तरह के अभ्यास किये गये है तथा उन अभ्यासो में कितनी विविधतायें हैं। क्या कोई ऐसा विषय है जिस पर बार बार अभ्यास हुआ हो? या कोई ऐसी विधा, जिस पर अभ्यास सबसे कम हुए हो। यदि ऐसा हुआ है तो परवर्ती अभ्यासुओं के लिये कइ नये रास्ते खुल सकते है। यद्यपि बाल साहित्य में कौनसी विधाओं में काम हुआ है यह भी जाना जा सकता है।

परिकल्पना
हिन्दी बाल साहित्य के विषय में --
1. अधिकतर कविता की विधा में अभ्यास किये गये होंगे।
2. मनोविज्ञान की प्रणाली से अभ्यास किये गये होंगे।
3. कर्तालक्षी या कृतिलक्षी अभ्यासों की संख्या सबसे अधिक होंगी।
4. संपूर्ण बाल साहित्य का अध्ययन कम ही हुआ होगा।
5. समान युनिवर्सिटी से किये गये अभ्यासों में समानता देखने को मिलेंगी।

क्रियाविधि
प्रस्तुत अभ्यास के लिये सर्वप्रथम तो मैंने यह देखने का प्रयत्न किया की बाल साहित्य के विषय में शोधगंगा वेबसाईट पर हिन्दी में कितने अभ्यास ग्रंथ अपलोड किये गये है? यह ढूंढने के लिये शोधगंगा वेबसाईट के खोज पोर्टल में केवल एक की वर्ड डाला था नामक 'बाल', और उसके पश्चात हिन्दी भाषा का चयन कर इस अतर्गत कितने अभ्यास ग्रंथ है यह देखा। परिणाम स्वरूप 266 अभ्यास ग्रंथो की सूचि मिली जिनमें से बाल साहित्य के विषय पर किये हुए अभ्यास ग्रंथो की संख्या लगभग 40 थी। इन 40 ग्रंथो के विषयों, अभ्यास कर्ता, अभ्यास करवानेवाले अध्यापक एवम् कौन-कौनसी युनिवर्सिटी से अभ्यास किया गया है उनकी सूचि तयार की गई। तद्पश्चात् हिन्दी बाल साहित्य की प्राथमिक जानकारी हेतु कुछ पथदर्शिकाओं का अध्ययन भी किया गया ताकि यह जाना जा सके कि हिन्दी बाल साहित्य में कैसा और कितना सृजन हुआ है। इन सभी जानकारीयों को ध्यान में रख कर मिले हुए अभ्यास ग्रंथो को वर्गीकृत किया गया है और जानने का प्रयत्न किया गया है कि पिछले दस वर्षों में इस विषय

पर कैसा काम हुआ है । समयावधि दस वर्षों की लेना अधिक योग्य मान कर यह अभ्यास किया गया है क्योंकि केवल पांच वर्षों की समयावधि लेने से कुछ महत्त्वपूर्ण अभ्यास ग्रंथो का उल्लेख छोड़ना पड़ रहा था ।

निष्कर्ष

प्राप्त जानकारी के अनुसार जो निष्कर्ष मिला है वह कुछ इस प्रकार है...

हिन्दी बाल साहित्य के विषय में पिछले दस वर्षों में भिन्न भिन्न युनिवर्सिटीयों से लगभग 40 जितने अभ्यासीओं ने अभ्यास किया है । उनमें से सबसे ज़्यादा 14 अभ्यासी छत्रपति शाहुजी महाराज युनिवर्सिटी से है । इन 14 अभ्यासीओं के अभ्यास की वस्तु को देखें तो अच्छी मात्रा में विविधता देखने को मिलती है । कर्ता को ध्यान में रख कर केवल 3 अभ्यास मिलते है तो वहीं मनोवैज्ञानिक अभिगम से कियो गए अभ्यासों की संख्या भी 3 है । लोकसाहित्य में बाल साहित्य जैसा अद्‌भूत विषय भी केवल एक अभ्यासी से जांचा गया है और वह भी इसी युनिवर्सिटी से किया गया अभ्यास है । एक तरफ जहाँ हम यह कहते हैं कि बाल साहित्य में सृजन कम होता है तो समग्र बाल साहित्य पर अभ्यास करना अधिक कठिन नहीं होना चाहिए । मगर समग्र बाल साहित्य पर किये गए अभ्यास की संख्या मात्र 2 है और कृतिलक्षी अभ्यास की संख्या केवल 1 ।

परिकल्पना के आधार पर देखें तो एक ही युनिवर्सिटी से किये गए अभ्यासों में समानता दिखेगी, इस परिकल्पना का यहाँ खंडन होता है । छत्रपति शाहुजी महाराज युनिवर्सिटी से किये गए 14 अभ्यासों में अनुचित लगे ऐसी कोई समानता दिखाई नहीं पड़ती ।

अन्य अभ्यासों की बात करें तो जिसे विशिष्ट रूप से बाल साहित्य का अभ्यास कहा जाता है, जिसमें बाल साहित्य की संज्ञा, विभावना, स्वरूप अवम् सृजन की दृष्टि से मूल्यांकन व अनुशीलन किया गया हो वैसे ग्रंथों की संख्या 12 के आसपास है । 12 अभ्यास स्वरूप को ध्यान में रख कर किये गए है और 12 अभ्यास सर्जक को ध्यान में रख कर किये गए है । बाल मनोविज्ञान को आधार रख कर किये गए अभ्यासों की संख्या 6 के करीब है । रामायण या बाल रामायण में बाल साहित्य जैसे विषय पर भी अभ्यास हुए है और कुछ अभ्यास ऐसे है जिन्हें आम तौर पर सामान्य नहीं कहा जा सकता परंतु ऐसे अभ्यास किये जाने चाहिए ऐसा अवश्य लगता है ।

जैसे की, पाठ्यपुस्तक या पाठ्यक्रम में कैसा बाल साहित्य संकलित हुआ है? प्रचलित ग्रीता प्रेस गोरखपुर द्वारा जो बाल साहित्य प्रकाशित होता है उनमें जिन मूल्यों की बात की जाती है वे मूल्य बच्चों के अभ्यासक्रम में जो पाठ होते हैं उनमें से मिलते भी है कि नहीं। समाज और देश के भविष्य समान मासूम बच्चों के दिल-दिमाग में अपने घर और आसपास के परिवेश के बाद सबसे अधिक असर पाठशाला की होती है । इस लिये आवश्यक माना जाना चाहिये की पाठशाला में बच्चों को जो पढाया जा रहा हो वह नैतिक मूल्यों ओर भावों से परिपूर्ण हो । इसी मुद्दे को ध्यान में रखते हुए छत्रपति शाहुजी महाराज युनिवर्सिटी से एक अभ्यास किया गया है जो अच्छी और सराहनीय बात है । एक अभ्यास आंतरविद्याकीय प्रणाली से भी हुआ है और एक अभ्यास नाटक आधारित भी मिलता है । ऐसे विषयों में अभी और काम होना बाकी है ।

इन सब के साथ साथ एक बात जो देखी गई है वह यह है कि परिक्षेत्रों पर आधारित अभ्यासों की संख्या केवल 1 है । वह भी कानपुर शहर के विस्तारों को ध्यान में रख कर किया गया अभ्यास है । हिन्दी बाल साहित्य के सृजन क्षेत्रों में केवल कानपुर क्षेत्र के सर्जित बाल साहित्य का अभ्यास किया गया है । ऐसे अभ्यासों की और भी आवश्यकता है । बालक के माहोल के अनुसार उन्हें दिया जाने वाला साहित्य कितना असरदार है और कितना कम असरदार – ऐसा भी एक अभ्यास मिलता है जो अनुकरणीय है । अंतत: हिन्दी बाल साहित्य के विषय में अच्छे, विभिन्न और सराहनीय काम हुए है इस बात में कोई शंका नहीं । बाल मनोविज्ञान के क्षेत्र में केवल हिन्दी साहित्य के विद्यार्थीयों ने ही नहीं, बलकि शिक्षण और इंग्लिश साहित्य के विद्यार्थीयों ने भी काम किया है यह उल्लेखनीय है ।

अनुशंसा

हमनें देखा कि बाल साहित्य की विविध विधाओं में से उपन्यास, कविता और नाटक की विधाओं में अभ्यास की दृष्टि से काम हुआ है परंतु नाटक की विधा अभी भी खुलनी बाकी है, इसमें और काम अपेक्षित है । कर्तालक्षी अभ्यासों में परशुराम शुक्ल के साहित्य सृजन पर अधिक काम मिलता है और बाकी सर्जकों पर बहुत कम । ऐसा क्युं है ये सोचना चाहिए । माना की परशुराम शुक्ल सबसे पहले प्रचलित बाल साहित्यकार है, परंतु उनके साहित्य सृजन के साथ उनके अनुगामी और परवर्ती साहित्यकारों के सृजन की तुलना का क्षेत्र भी अभी तक उपेक्षित है, इस पर ध्यान जाना चाहिए । आज के दौर में देखा जाता है कि बाल साहित्य के नाम पर कुछ अनपेक्षित और रिझाव वाली रचनाओं से बच्चें ग्रस्त हो रहे हैं । ऐसी बातों और ऐसे विषयों को भी उजागर करना आवश्यक है । यह काम अभ्यासी ही कर सकते है

संदर्भ :

वेबसाइट्स् :

1. https://bharatdarshan.co.nz/magazine/38/baal-sahitya.html
2. http://gadyakosh.org/gk/
3. http://shodhganga.inflibnet.ac.in:8080/jspui/simple-search?location=%2F&query=bal&rpp=10&sort_by=score&order=

पुस्तकें :

1. बड़ा कोश (हिन्दी-गुजराती) : संपा. प्रा. रतिलाल सां. नायक, परा. भोळाभाई पटेल, अक्षरा प्रकाशन, अहमदाबाद, प्र.सं. 2001, पु.मु. 2012
2. भारतीय साहित्य : डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 2004